ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department OF - History - Subsidiary
27-05-2020 - B.A.I [2019-20]
Dr. Satyajeet Saarang - [Notes]

[11.] तुर्क आक्रमण - महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी कारण और परिणाम।

तुर्क आक्रमण :- तुर्कों के आगमन के पूर्व भारत की राजनीतिक अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी। भारतवर्ष अनेक छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभक्त था। इन राज्यों के बीच परस्पर फूट एवं ईर्ष्या की भावना थी। वे अपनी प्रभुसत्ता की स्थापना के उद्देश्य से स्वयं एक-दूसरे के साथ संघर्ष में उलझे रहते थे। केन्द्रीय सत्ता का अभाव, राजनीतिक फूट, सामन्ती करने तथा विजय प्राप्त करने के लिए तुर्कों को एक सुनहला अवसर मिल गया था।

मुलतान और सिन्ध :- मुलतान और सिन्ध पर अरबों का अधिकार था। खलीफाओं की उदासीन और उपेक्षापूर्ण नीति से तंग आकर 871 ई० में दो राज्यों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। मुलतान और सिन्ध में अरबों की स्थिति अच्छी नहीं थी। वे विदेशी थे और अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखकर खलीफा के

प्रति नाममात्र की स्वामिभक्ति रखते थे। परिस्थिति विशेष के अनुसार राज्यों में कई राजवंशों का परिवर्तन हुआ। पहले मुलतान में करमाथी लोगों का राज्य था। फतेह दाऊद मुलतान का शासक था। फतेह दाऊद एक योग्य एवं लोकप्रिय शासक था। सिन्ध पर अरबों का अधिकार था। पड़ोस के हिन्दू राज्यों के द्वारा अरबों को कभी तंग नहीं किया गया। अरबों को इस्लाम धर्म का प्रचार करने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था। इस प्रकार भारत के उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर स्थित मुलतान और सिन्ध के राज्य मुसलमान थे तथा उनमें तुर्कों के प्रति स्वाभाविक रूप से सहानुभूति के भाव थे।

मुसलमानी राज्यों के अतिरिक्त शेष भारत में निम्नलिखित राज्य थे।

हिन्दूशाही राज्य :- हिन्दूशाही राज्य का संस्थापक कल्लर नामक एक ब्राह्मण मंत्री था। उसके राज्य का विस्तार चिनाब नदी से हिन्दूकुश तक था। इसमें काबुल भी सम्मिलित था। लगभग 200 वर्षों तक हिन्दूशाही राज्य अरबों के साथ संघर्ष कर अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने सफल रहा। परन्तु कालान्तर में उसे अफगानिस्तान छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा।

हिन्दूशाही राज्य की राजधानी उदभपुर था वैहन्द को बनाया गया। दसवीं शताब्दी में जयपाल इस क्षेत्र पर शासन करता था जयपाल वीर, साहसी एवं योग्य शासक था, परन्तु सीमा स्थित रहने के कारण सर्वप्रथम जयपाल को ही तुर्कों के आक्रमण का सामना करना पड़ा।

कश्मीर :- कश्मीर एक शक्तिशाली हिन्दू राज्य था। कश्मीर का प्रसिद्ध शासक शंकरवर्मन था। शंकरवर्मन के शासनकाल में कश्मीर राज्य की सीमा कई दिशाओं में बढ़ी थी। वह उरस लोगों के साथ युद्ध मारा गया। उसकी मृत्यु के बाद कश्मीर में अराजक स्थिति उत्पन्न हो गई। कश्मीर के ब्राह्मणों ने यशस्कर नामक व्यक्ति को कश्मीर का शासक नियुक्त किया। किन्तु यशस्कर का शासन अधिक दिनों तक नहीं चल सका। यशस्कर की वंश-परम्परा की समाप्ति के बाद पर्वगुप्त ने एक स्वतंत्र राजवंश की नींव कश्मीर में डाली।

पर्वगुप्त के बाद उसका पुत्र क्षेमेन्द्र कश्मीर का शासक हुआ। क्षेमेन्द्र नामधारी शासक था। शासन का संचालन उसकी पत्नी दिद्दा कर रही थी। दिन क्षेमेन्द्र को गद्दी से वंचित कर स्वयं कश्मीर की शासिका बन बैठी। दिद्दा का शासन 1003ई० तक रहा